

**सभ्यता स्त्री.** (तत्.) 1. सभ्य होने का भाव, शिष्टता 2. विनम्र व शिक्षित होने की अवस्था 3. सज्जनता 4. भलमन साहत, शराफत।

**सभ्येतर वि.** (तत्.) 1. सभ्य से इतर, अशिष्ट असभ्य, उद्दंड 2. जो सभा का सदस्य न हो।

**समंग वि.** (तत्.) जो सभी अंगों से युक्त, पूर्ण हो।

**समंगा स्त्री.** (तत्.) 1. मंजीठ 2. लजीली 3. वराहक्रांता 4. बला नामक ओषधि।

**समंगिनी स्त्री.** (तत्.) बौद्धों की एक देवी।

**समंगी वि.** (तत्.) 1. जिसके सभी अंग पूर्ण हो 2. जिसके सभी अंग समान हो 3. जो सम्पूर्ण भागों से युक्त हो।

**समंचार स्त्री.** (देश.) समाचार।

**समंजन पुं.** (तत्.) 1. एक चीज को दूसरी चीज के साथ जोड़ना 2. यंत्रों के कल पुरजों को यथास्थान बैठाना 3. उचित मेल मिलाप 4. लेप करना 5. मलना, मालिश करना।

**समंजस वि.** (तत्.) 1. उचित, सही, ठीक 2. किसी वस्तु, व्यवहार, व्यक्तित्व आदि के साथ मेल खाने वाला 3. किसी काम या बात का अभ्यस्त।

**समंजित वि.** (तत्.) 1. जिसका समंजन किया गया हो 2. जो ठीक करके परिस्थितियों के अनुकूल या उपयुक्त बनाया गया हो।

**समंत पुं.** (तत्.) 1. सीमा, किनारा, सिरा 2. समस्त, सकल।

**समंतदर्शी वि.** (तत्.) 1. जो सब कुछ देखने में समर्थ हो पुं. 1. परमेश्वर 2. महात्मा बुद्ध।

**समंतपंचक वि.** (तत्.) 1. जो पूर्ण रूप से कल्याणकारी या आनन्ददाता हो 2. जो सर्वप्रिय हो पुं. महात्मा बुद्ध।

**समंतभद्र पुं.** (तत्.) गौतम बुद्ध।

**समंतालोक पुं.** (तत्.) योग विद्या में ध्यान करने का एक प्रकार।

**समंद पुं.** (फा.) 1. एक घोड़ा जो बादामी रंग का हो तथा जिसकी अयाल, दुम, पुट्ठे काले हों 2. समुद्री घोड़ा 3. बड़ा तालाब या झील।

**समंदर पुं.** (फा.) 1. समुद्र, सागर 2. फारसी कवि-समय के अनुसार एक कल्पित जंतु जो अग्निकुंड में उत्पन्न होता है और बाहर निकलते ही मर जाता है।

**सम वि.** (तत्.) 1. समान, तुल्य, बराबर 2. जिसका तल पूरी तरह से एक जैसा हो अर्थात् ऊबड़-खाबड़ न हो, समतल, चौरस 3. वह (संख्या) जिसे दो से भाग देने पर कुछ न बचे 4. समस्त, सब पुं. 1. संगीत में वह स्थान जहाँ लय के लिए विचार से गति की समाप्ति होती है और जहाँ गाने या बजाने वाले का सिर हिलता या हाथ आप से आप आघात सा करता है 2. साहित्य में एक अर्थालंकार जिसमें किसी रूप या नाम के अनुरूप कार्यो, गुणों आदि का वर्णन होता है 3. ज्योतिष में समराशि जैसे-वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन 4. पुं. अर. विष, जहर 5. पुं. (फा.) कसम, सौगंध, शपथ।

**सम समुन्नत वि.** (तत्.) जो थोड़ी-थोड़ी दूरी पर सीढियों की तरह बराबर अधिक ऊँचा होता जाता हो, सीढ़ीनुमा।

**सम-अजिर पुं.** (तत्.) प्राचीन कालीन भारत में वह स्थान जहाँ जनसामान्य के मनोरंजन के लिए विविध तरह के खेल, कुश्तियाँ, नाटक आदि होते थे।

**समकक्ष पुं.** (तत्.) 1. जो किसी के समान या तुल्य हो 2. जो गुणों आदि की दृष्टि से बराबर का हो, समतुल्य।

**समकक्ष सरकार स्त्री.** (तत्.+फा.) किसी देश की वह सरकार जो प्रचलित सरकार को अयोग्य या अवैध करार देकर उसके विरोध स्वरूप उसी के तुल्य गठित की गई हो।

**समकना अ.क्रि.** (देश.) चमकना (चौंकना)।